Daily Current Affairs
20 July 2025

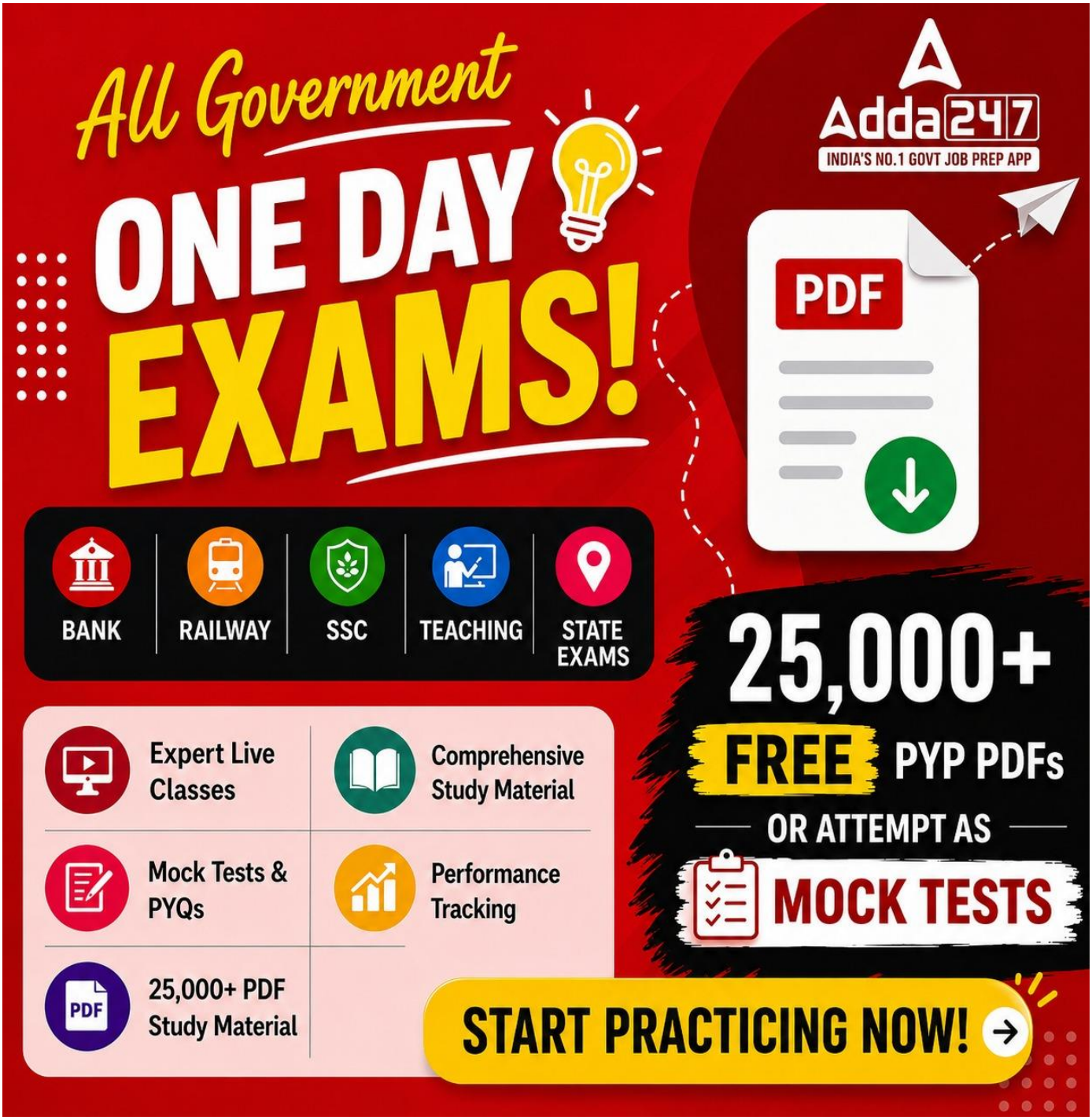

Daily Current Affairs Quiz 20 July 2026

Q1. अबाथसहायेश्वर मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए यूनेस्को पुरस्कार (Award of Distinction) की घोषणा कब की गई थी?
(a) 6 दिसंबर, 2024
(b) 26 जनवरी, 2025
(c) 14 नवंबर, 2024
(d) 2 अक्टूबर, 2024
Ans.(a)
Sol. सही उत्तर (A) 6 दिसंबर, 2024 है
व्याख्या:
• संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने औपचारिक रूप से 6 दिसंबर, 2024 को सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए प्रतिष्ठित एशिया-प्रशांत पुरस्कारों के विजेताओं की घोषणा की, जिसमें पूरे क्षेत्र में असाधारण संरक्षण प्रयासों को मान्यता दी गई।
• तमिलनाडु के कुंभकोणम के पास थुक्काची गांव में स्थित ऐतिहासिक अबाथसहायेश्वर मंदिर को इस चक्र के दौरान गर्व से शीर्ष-स्तरीय 'अवार्ड ऑफ डिस्टिंक्शन' से सम्मानित किया गया, जो इसकी विश्व-स्तरीय जीर्णोद्धार पद्धति को उजागर करता है।
• यह घोषणा यूनेस्को के बैंकॉक क्षेत्रीय कार्यालय से संरक्षण वास्तुकारों, विरासत विशेषज्ञों और प्रसिद्ध पुरातत्वविदों की एक अंतरराष्ट्रीय जूरी द्वारा आयोजित कड़े और गहन बहु-माह जांच प्रक्रिया के बाद आधिकारिक रूप से जारी की गई थी।
• 6 दिसंबर, 2024 को मिली यह वैश्विक मान्यता 1,000 साल पुराने जीवित मंदिर परिसर के अत्यधिक जीर्ण-शीर्ण, वनस्पति-युक्त और संरचनात्मक रूप से समझौता किए गए ढांचे को उसकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता को मिटाए बिना विरासत और सामुदायिक जीवन के एक सुरक्षित, जीवंत केंद्र में बदलने के अनुकरणीय परिवर्तन के लिए थी।
Information Booster:
• यूनेस्को एशिया-प्रशांत सांस्कृतिक विरासत संरक्षण पुरस्कार 2000 से संचालित हो रहे हैं, जिनका उद्देश्य निजी व्यक्तियों, गैर-सरकारी समूहों और सार्वजनिक-निजी भागीदारी की प्रशंसा करना है जो ऐतिहासिक संरचनाओं को सफलतापूर्वक बहाल करते हैं।
• उसी 2024 पुरस्कार चक्र में, एक अन्य प्रमुख भारतीय संरचना, मुंबई, महाराष्ट्र में स्थित प्रतिष्ठित गोथिक-शैली के बीजेपीसीआई स्कूल भवन को 'अवार्ड ऑफ मेरिट' श्रेणी के तहत वैश्विक प्रशंसा मिली, जो भारतीय विरासत संरक्षण के लिए एक शानदार वर्ष रहा।
Additional Knowledge:
• 26 जनवरी, 2025 (विकल्प B): भारत के राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है जो उस तारीख को याद करता है जब संविधान लागू हुआ था, जिसमें पद्म पुरस्कार जैसे नागरिक राज्य पुरस्कार शामिल हैं, जो संयुक्त राष्ट्र की विरासत घोषणाओं से पूरी तरह अलग हैं।
• 14 नवंबर, 2024 (विकल्प C): पूरे भारत में पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के सम्मान में बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो अंतरराष्ट्रीय यूनेस्को संरक्षण जूरी की अंतिम चयन बैठकों से सप्ताहों पहले आता है।
• 2 अक्टूबर, 2024 (विकल्प D): वैश्विक स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस और राष्ट्रीय स्तर पर गांधी जयंती के रूप में जाना जाता है, जो इंजीनियरिंग संरक्षण घोषणाओं के बजाय शांतिपूर्ण कूटनीति, मानवाधिकारों और राजनीतिक नैतिकता पर पूरी तरह केंद्रित है।

Q2. अबाथसहायेश्वर मंदिर तमिलनाडु के किस जिले में स्थित है?
(a) मदुरै
(b) तिरुचिरापल्ली
(c) तंजावुर
(d) सेलम

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (C) तंजावुर है

व्याख्या:

• महान अबाथसहायेश्वर मंदिर थुक्काची के शांतिपूर्ण ग्रामीण गांव में स्थित है, जो प्रशासनिक रूप से भारत के तमिलनाडु राज्य के ऐतिहासिक तंजावुर जिले की सीमाओं के भीतर आता है।

• मंदिर परिसर सुंदर अरसलार नदी के उपजाऊ तटों पर रणनीतिक रूप से स्थित है, जो कुंभकोणम के प्रमुख नगरपालिका मंदिर केंद्र और सांस्कृतिक शहर से लगभग 16 किलोमीटर दूर है।

• मंदिर का सटीक स्थल गहरा स्थान-नाम महत्व रखता है, क्योंकि 'थुक्काची' शब्द 'दुर्गा अची' का एक स्थानीय भाषाई संशोधन है, जो मंदिर की परिधि के भीतर दक्षिण-मुखी गर्भगृह में स्थापित देवी दुर्गा की शक्तिशाली उपस्थिति को संदर्भित करता है।

• तंजावुर के प्रतिष्ठित कावेरी नदी डेल्टा प्रणाली में स्थित होने के कारण, मंदिर ने ऐतिहासिक रूप से एक बड़े पैमाने पर सामाजिक-आर्थिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया, जो एक सहस्राब्दी से अधिक समय से कृषि भूमि अनुदान, स्थानीय जल चैनलों और ग्राम प्रशासनिक परिषदों का प्रबंधन करता था।

Information Booster:

• तंजावुर जिले को पूरे भारत में शास्त्रीय दक्षिण भारतीय संस्कृति के पालने के रूप में व्यापक रूप से सम्मानित किया जाता है, जो तंजौर चित्रों, कर्नाटक संगीत नींव, भरतनाट्यम नृत्य शैलियों और प्रतिष्ठित जीआई-टैग वाले तंजावुर गुड़िया के जन्म क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त है।

• भौगोलिक क्षेत्र असाधारण मध्ययुगीन पत्थर वास्तुकला से भरा हुआ है, जिसमें वैश्विक विरासत संरक्षण प्रोटोकॉल के तहत संयुक्त राष्ट्र द्वारा सामूहिक रूप से 'ग्रेट लिविंग चोल टेम्पल्स' के रूप में वर्गीकृत तीन अलग-अलग स्मारकीय मंदिर शामिल हैं।

Additional Knowledge:

• मदुरै (विकल्प A): दक्षिणी तमिलनाडु में स्थित एक प्राचीन महानगर, जिसे व्यापक रूप से 'पूर्व का एथेंस' और पांड्य शासकों की ऐतिहासिक सीट के रूप में जाना जाता है, जो लुभावनी मीनाक्षी अम्मन मंदिर परिसर के आसपास बनाया गया है।

• तिरुचिरापल्ली (विकल्प B): कावेरी नदी पर स्थित एक प्रमुख औद्योगिक और सांस्कृतिक जिला, जो श्रीरंगम में विशाल श्री रंगनाथस्वामी मंदिर के लिए प्रसिद्ध है, जो दुनिया भर के सबसे बड़े कार्यात्मक धार्मिक परिसरों में से एक है।

• सेलम (विकल्प D): तमिलनाडु का एक प्रमुख उत्तर-मध्य जिला जो सुंदर शेवरॉय पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जो अपने व्यापक लौह अयस्क जमा, इस्पात निर्माण संयंत्रों और बड़े पैमाने पर बॉक्साइट खनन के लिए जाना जाता है, न कि मध्ययुगीन डेल्टा मंदिर वास्तुकला के लिए।

Q3. अबाथसहायेश्वर मंदिर किस राजवंश की वास्तुशिल्प उत्कृष्ट कृति है?

(a) पल्लव

(b) चोल

(c) पांड्य

(d) विजयनगर

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर (B) चोल है

व्याख्या:

• शानदार अबाथसहायेश्वर मंदिर बाद के चोल राजवंश का एक शानदार और निश्चित संरचनात्मक स्मारक है, जिसे मुख्य रूप से 11वीं शताब्दी के अंत और 12वीं शताब्दी की शुरुआत के दौरान मध्ययुगीन शाही शक्ति की ऊंचाइयों के दौरान बनाया गया था।

• पत्थर के बेसमेंट और दीवारों पर उकेरे गए व्यापक पुरालेख रिकॉर्ड साबित करते हैं कि मंदिर परिसर को कुलुंग चोल प्रथम और उनके प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी, विक्रम चोल के शासनकाल के दौरान निरंतर शाही संरक्षण, भौतिक विस्तार और समृद्ध स्वर्ण दान प्राप्त हुए।

• ऐतिहासिक मंदिर की पांडुलिपियां बताती हैं कि राजा विक्रम चोल ने संरचनात्मक पत्थर की दीवारों के भव्य विस्तार का आदेश दिया था, जब उन्हें कथित तौर पर अड़तालीस दिनों तक इस पवित्र मंदिर में निरंतर भक्ति अर्पित करके एक गंभीर त्वचा रोग से ठीक किया गया था।
• मंदिर में देर से चोल डिजाइन के हस्ताक्षर शामिल हैं, जिसमें शुरुआती सुबह की सौर किरणों को केंद्रीय देवता को रोशन करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक अत्यधिक उन्नत लेआउट, जटिल रूप से गढ़ी गई लघु-मूर्तियां और एक आकाशीय शोभायात्रा रथ का प्रतिनिधित्व करने वाला एक ऊंचा पत्थर का आधार शामिल है।
Information Booster:
• चोल साम्राज्य शुरुआती ईंट के मंदिरों को हमेशा के लिए रहने वाले ग्रेनाइट संरचनाओं के साथ बदलने के लिए असाधारण रूप से प्रसिद्ध था, जो बिना बंधन मोर्टार के विशाल पत्थर के ब्लॉकों को जगह में उठाने के लिए उन्नत इंजीनियरिंग तकनीकों का उपयोग करते थे।
• थुक्काची मंदिर को कला इतिहासकारों द्वारा अत्यधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि यह श्री सरभेश्वर की शुरुआती ज्ञात पत्थर की मूर्ति वाली नक्काशी में से एक है—एक भयंकर, बहु-अंगों वाला पौराणिक अवतार जो देर से चोल काल के दौरान पेश किए गए शेर और पक्षी विशेषताओं को जोड़ता है।
Additional Knowledge:
• पल्लव (विकल्प A): द्रविड़ रॉक-कट वास्तुकला, अखंड रथों और 6वीं से 8वीं शताब्दी ईस्वी के बीच मामल्लपुरम में तटीय पत्थर परिसरों को शुरू करने के लिए प्रसिद्ध एक शक्तिशाली उत्तरी तमिल राजवंश।
• पांड्य (विकल्प C): बाद के मध्ययुगीन युगों में उनके संरचनात्मक योगदान के लिए प्रसिद्ध एक गतिशील दक्षिणी समुद्री राजवंश, जो हजारों स्टुको आंकड़ों से सजाए गए बड़े पैमाने पर बहु-स्तरीय प्रवेश द्वारों (गोपुरम) के निर्माण पर जोर देता है।
• विजयनगर (विकल्प D): एक शक्तिशाली उत्तर-मध्ययुगीन साम्राज्य जिसने दक्षिणी भारत को एकजुट किया, जिसमें अत्यधिक नाटकीय कलात्मक तत्व जैसे कि फैले हुए खुले विधानसभा हॉल (कल्याणी मंडपम) और पौराणिक जानवरों को पालने वाले अलंकृत खंभे शामिल थे।

Q4. तमिलनाडु के किस मंदिर को दिसंबर 2024 में उसके अनुकरणीय जीर्णोद्धार के लिए यूनेस्को का 'अवार्ड ऑफ डिस्टिंक्शन' प्राप्त हुआ?
(a) बृहदेश्वर मंदिर
(b) ऐरावतेश्वर मंदिर
(c) अबाथसहायेश्वर मंदिर
(d) मीनाक्षी अम्मन मंदिर
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर (C) अबाथसहायेश्वर मंदिर है
व्याख्या:
• दिसंबर 2024 में, संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने थुक्काची स्थित अबाथसहायेश्वर मंदिर को सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए अत्यधिक सम्मानित 'एशिया-प्रशांत अवार्ड ऑफ डिस्टिंक्शन' प्रदान किया।
• ऐतिहासिक संरचना को कई देशों के दर्जनों प्रतिस्पर्धी सबमिटलों में से चुना गया था, जिसने हजार साल पुराने जीवित अभयारण्य के पूर्ण संरचनात्मक पतन को रोकने में दिखाई गई तकनीकी पूर्णता के लिए प्रशंसा अर्जित की।
• दीर्घकालिक जीर्णोद्धार कार्यक्रम की वैश्विक मूल्यांकन पैनल द्वारा अत्यधिक सराहना की गई क्योंकि इसने 3D लेज़र रेंडरिंग और डिजिटल ब्लॉक नंबरिंग जैसे अत्याधुनिक इंजीनियरिंग उपकरणों को प्राचीन स्थापत्य वेद मैनुअल परंपराओं के क्लासिक नियमों के साथ सहजता से जोड़ दिया।
• एक प्रमुख विशेषता जिसने परियोजना को इसका 'अवार्ड ऑफ डिस्टिंक्शन' अर्जित कराया, वह इसका अत्यधिक सफल समुदाय-संचालित मॉडल था, जहां ग्रामीण ग्रामीणों, पारंपरिक कारीगरों और कॉर्पोरेट परोपकारियों ने ठोस पत्थर की संरचनाओं और क्षेत्र के अमूर्त आध्यात्मिक रीति-रिवाजों दोनों को पुनर्जीवित करने के लिए हाथ मिलाया।

Information Booster:
• यूनेस्को एशिया-प्रशांत पुरस्कार सक्रिय स्थानीय विरासत स्वामित्व को प्रोत्साहित करना चाहते हैं, उन परियोजनाओं को उजागर करते हैं जो सार्वजनिक संरचनाओं को सफलतापूर्वक बहाल करती हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उन्हें भविष्य की पीढ़ियों को सुरक्षित रूप से सौंपा जा सके।
• थुक्काची जीर्णोद्धार की सफलता को राज्य अधिकारियों द्वारा एक मॉडल केस स्टडी के रूप में सराहा गया है, जो दक्षिण भारत में सैकड़ों अन्य प्राचीन ग्रामीण मंदिरों को बहाल करने की योजना बना रही सार्वजनिक एजेंसियों के लिए एक परिचालन रोडमैप प्रदान करता है।
Additional Knowledge:
• बृहदेश्वर मंदिर (विकल्प A): राजा राज चोल प्रथम द्वारा निर्मित तंजावुर का प्रमुख स्मारक, 1987 से एक सक्रिय यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित, जिसका अर्थ है कि यह हालिया आपातकालीन एनजीओ जीर्णोद्धार के बजाय उच्च-स्तरीय संस्थागत देखभाल प्राप्त करता है।
• ऐरावतेश्वर मंदिर (विकल्प B): कुंभकोणम के पास दारासुरम में स्थित, यह नाजुक उत्तर-चोल चमत्कार नामित विश्व धरोहर क्लस्टर का एक और हिस्सा है, जो अपने पत्थर के पहियों और खंभों के लिए प्रसिद्ध है।
• मीनाक्षी अम्मन मंदिर (विकल्प D): मदुरै में स्थित एक विशाल, भारी भीड़ वाला तीर्थ परिसर, जो राज्य बोर्डों द्वारा प्रबंधित है, जो ग्रामीण संरक्षण पुरस्कारों के बजाय अपनी बहु-मंजिला मीनारों और आधुनिक भीड़ के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है।

Q5. अबाथसहायेश्वर मंदिर की जीर्णोद्धार परियोजना लगभग कितनी लागत में पूरी हुई?
(a) ₹2 करोड़
(b) ₹3 करोड़
(c) ₹5 करोड़
(d) ₹10 करोड़
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर (C) ₹5 करोड़ है
व्याख्या:
• थुक्काची स्थित भव्य अबाथसहायेश्वर मंदिर परिसर का व्यापक संरचनात्मक जीर्णोद्धार, सफाई और सफल भौतिक संरक्षण लगभग ₹5 करोड़ की कुल परियोजना लागत पर प्राप्त किया गया था।
• यह अत्यधिक कुशल वित्तीय परियोजना एक गतिशील सार्वजनिक-निजी सहयोग के माध्यम से सफलतापूर्वक पूरी की गई, जिसमें कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) पहलों—विशेष रूप से कोयंबटूर स्थित करपगम ट्रस्ट—से भारी मौद्रिक धन प्राप्त हुआ, साथ ही स्थानीय सामुदायिक फंडिंग पूल भी इसमें शामिल थे।
• ₹5 करोड़ के बजट को अत्यधिक तकनीकी और शारीरिक रूप से मांग वाले कार्यों के लिए सावधानीपूर्वक प्रबंधित किया गया था, जिसमें विशाल आक्रामक बरगद के पेड़ों की जड़ों को मैन्युअल रूप से हटाना शामिल था जिन्होंने पत्थर की छतों को विभाजित कर दिया था, साथ ही अत्यधिक अस्थिर गर्भगृह की दीवारों को ब्लॉक दर ब्लॉक फिर से बनाना शामिल था।
• इन निधियों का उपयोग मास्टर पारंपरिक पत्थर नक्काशी करने वालों (स्थापतियों) को कई वर्षों तक भुगतान करने, उच्च गुणवत्ता वाली संरचनात्मक सुदृढीकरण सामग्री सुरक्षित करने, पवित्र मंदिर टैंक से सदियों की गाद को साफ करने और भव्य आध्यात्मिक कुंभाभिषेक पुनरुद्धार अनुष्ठान को निष्पादित करने के लिए भी किया गया था।
Information Booster:
• थुक्काची परियोजना ने किफायती विरासत प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण मिसाल कायम की, यह साबित करते हुए कि प्रमुख वास्तुशिल्प खंडहरों को ₹5 करोड़ की मामूली राशि के लिए पूरी तरह से बहाल किया जा सकता है जब स्थानीय सार्वजनिक स्वयंसेवक महंगी वाणिज्यिक गतिविधियों की जगह लेते हैं।
• उच्च-रिज़ॉल्यूशन हवाई ड्रोन सर्वेक्षणों जैसी आधुनिक डिजिटल मैपिंग तकनीकों ने इंजीनियरों को स्थानांतरित पत्थर की दीवारों को फिर से ढेर करने के दौरान महंगी मैन्युअल परीक्षण-और-त्रुटि वाली गलतियों से बचने में मदद की।

Additional Knowledge:

• ₹2 करोड़ (विकल्प A): एक अपर्याप्त वित्तीय राशि जो सात एकड़ के विशाल ऐतिहासिक स्थल पर आवश्यक लंबे समय तक श्रम लागत, भारी उठाने वाली मशीनरी और बहु-वर्षीय संरचनात्मक मरम्मत को कवर नहीं कर पाती।

• ₹3 करोड़ (विकल्प B): हालांकि यह एक महत्वपूर्ण राशि है, लेकिन यह संरचनात्मक नींव के धंसने और छत के रिसाव की पूरी सीमा का पता चलने से पहले का प्रारंभिक बजट अनुमान था।

• ₹10 करोड़ (विकल्प D): अंतिम व्यय का अधिक अनुमान; परियोजना इस उच्च आंकड़े तक पहुंचने से बचने में सफल रही क्योंकि स्थानीय रूप से उपलब्ध पारंपरिक सामग्रियों का उपयोग किया गया और महंगी अंतरराष्ट्रीय ठेकेदारों के बजाय स्थानीय ग्रामीण श्रम नेटवर्क को शामिल किया गया।